9L6NV9

पाठ 13

विजयबेला

– श्री जगदीश चंद्र माथुर

1857 की क्रांति भारतवासियों में एक आत्मबल का संचार करता है। उन्हें यह एहसास होता है कि वे अंग्रेजी शासन के विरुद्ध आवाज उठाने में समर्थ हैं। यह आत्मबल 80 वर्ष के सेनानी बीर कुँवरसिंह जैसे योद्धाओं के कारण हो पाता है। जगदीशपुर के महाराजा कुँवर सिंह की पराक्रम कथा इस रूप में वर्णित है कि अंग्रेजों से लड़ते हुए उनके एक बांह में गोली लग गई और वे युद्ध करते रहे अंत में पीड़ा की अधिकता के कारण अपनी घायल बांह को स्वयं काट कर गंगा को भेंट चढ़ा देते हैं। यह कथन कि रैयत, मल्लाह, किसान यही वे शक्ति हैं जिसके बल पर कुँवर सिंह भोजपुर का राजा है। जन के प्रति कुंवरसिंह के नेह भाव को व्यक्त करती है। ऐतिहासिक एकांकीकार श्री जगदीश चन्द्र माथुर ने कुँवर सिंह के इन्हीं रूप छवि को एकांकी में प्रस्तुत किया है।

पात्र परिचय

कुँवर सिंहः 1857 की क्रान्ति के सेनानी। बिहार में जगदीशपुर के महाराज।

अमर सिंहः कुँवरसिंह के छोटे भाई।

हरिकिशुन सिंहः कुँवरसिंह का वफादार साथी।

नाथू सरदारः शिवापुर घाट पर मल्लाहों के सरदार।

भीमाः एक मल्लाह।

मैकूः दूसरा मल्लाह।

पुरोहित जीः कुँवर सिंह के राजपुरोहित।

विश्वनाथ सिंहः अमर सिंह का हरकारा (संदेशवाहक)

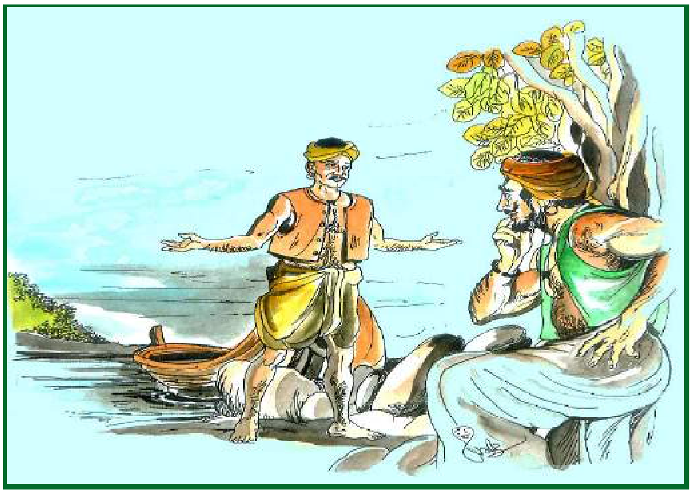

पहला दृश्य

(मल्लाहों के सरदार की झोंपड़ी के सामने गंगा से कुछ हटकर नाथू सरदार खड़ा है। भीमा मल्लाह का प्रवेश।)

भीमाः सरदार! सरदार!

सरदारः आ गए, भीमा! काम पूरा हुआ?

भीमाः बिल्कुल! देखो, ये चार नावें किनारे पर भी आ लगीं।

सरदारः कुल चालीस नावें होंगी, भीमा।

भीमाः छोटी बड़ी सब मिलाकर! पानी में से निकालते–निकालते दम फूल गया।

सरदारः न डुबाते, तो फिरंगी जनरल गोलियों से नावों को बेकार कर देता। भीमा, सिपाही लोगों के उतरने पर मल्लाहों को क्या हुक्म है?

भीमाः जैसा सरदार ने कहा था सब नावें इसी किनारे रहेंगी और रात–रात में उस पार वापस होकर फिर डुबा दी जाएँगी। अब तो करीब–करीब सभी नावें पार लग चुकीं। यह देखो न!

सरदारः हाँ, पर महाराज अभी तक नहीं आए।

भीमाः महाराज सब बंदोबस्त आप ही देखते हैं। सारी फौज को उतारकर खुद नाव पकड़ेंगे। इस उमर में और यह हिम्मत! सुना है, अस्सी बरस के हो चुके हैं।

सरदारः एक पखवारे से बराबर लड़ाई हो रही है– अतरौलिया, आजमगढ़, मगहर हर जगह कुँवर सिंह, हर जगह वह तूफान, मगर गंगा मैया ने कैसी शक्ति उस बूढ़े कुँवर सिंह के बदन में फूँक दी है। बिजली की जोत है कि पल में चकाचौंध कर दे। सावन की झड़ी है कि जो थमने का नाम ही न ले।

भीमाः एक बात कहूँ सरदार, धरती से आसमान तक बादल घुमड़ते हैं तो बिजली कड़कती है। राजा कुँवर सिंह के पीछे भोजपुर के किसानों, मल्लाहों, ग्वालों और रैयत का बल है। गरीबों का राजा कुँवर सिंह अमृत का घूँट पिए है, उसे बुढ़ापा छू नहीं सकता। सरदार, तुमने वह गीत सुना है?

सरदारः कौन सा?

भीमाः 'राजा कुँवर सिंह का राज!'

सरदारः कुँवर सिंह के गीत तो आजकल बच्चे–बच्चे की जबान पर हैं। फिर भी गीत सुनाओ–

भीमाः (गाने के स्वर में)

राजा कुँवर सिंह का राज,
कि जिसमें सिरजें सबके काज।
कि जिसमें दीन बने सरताज,
कि जिनके छूने में थी लाज,
ताज पर इठलाता है आज।
राजा कुँवर सिंह का राज।

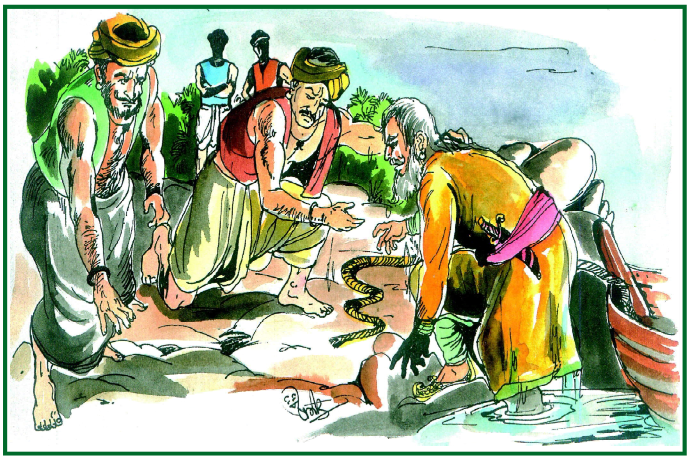

सरदारः भीमा! महाराज को अब तक आ जाना चाहिए था। शायद चलते–चलते फिरंगी की आँखों में कुछ और धूल झोंकने का इंतजाम करते हों।

भीमाः राजा कुँवर सिंह की बुद्धि की क्या तारीफ करूँ सरदार, कटार की धार–सी पैनी है। हरकिशुन को साधु बनाकर भेजा, जानते हो किसलिए?

सरदारः क्यों?

भीमाः हरकिशुन ने गाँव–गाँव में खबर उड़ा दी कि नावें तो मिल नहीं रहीं, इसलिए कुँवर अपनी फौज के साथ बलिया घाट पर हाथियों से गंगा पार करेंगे।

सरदारः फिरंगी ने सब सुना होगा।

भीमाः सब सुना और फिर हरकिशुन ने जर्नेलों के सामने भी यही बात कही। फिर क्या था? दोनों जर्नेलों ने बलिया घाट की तरफ घोड़े दौड़ा दिए। वहाँ छिपकर दाँव लगाए बैठे हैं कि कब कुँवर सिंह के हाथी गंगा पार करें और कब उन्हें ठिकाने लगाएँ।

सरदारः (हँसते हुए) खूब, और इधर शिवाघाट पर मैदान साफ हो गया और राजा कुँवर सिंह नावों पर गंगा पार करके आ पहुँचे। खूब छकाया।

(दूर से कुछ गोलियों की आवाज़)

सरदारः भीमा, कुछ सुना?

भीमाः गोलियाँ?

सरदारः भीमा, वह फिरंगी की फौज– वह देखो–

(फिर गोलियों की आवाज और स्पष्ट)

मैकूः सरदार, सरदार, वह देखिए, नाव–अकेली नाव।

सरदारः हाँ, महाराज ही हैं। (गोली की आवाज़) गोली चल रही है–– नाव पर निशाना है।

भीमाः अगर मल्लाह को गोली लगी तो– (फिर बौछार)

मैकूः और अगर महाराज को लगी।– सरदार, कुछ करना है। सिपाही लोग कुछ न कर सकेंगे इस मौके पर।

सरदारः मैं जाता हूँ –(गोलियों की आवाज़)

भीमाः किधर?

सरदारः नदी में तैरकर, साथ में रस्सी ले जाऊँगा। तुम किनारे से खींचना।

भीमाः नहीं सरदार, तुम यहीं ठहरो, तुम्हारे बिना इधर का काम बिगड़ सकता है। मैकू, यह लो रस्सा। मैं कमर से बाँधकर तैरता हूँ। जरूरत होगी, तो नाव से बाँध दूँगा और तुम लोग खींचते जाना। महाराज को बचाना है। (भीमा जाता है। गोलियों की आवाज़। फिर पानी में छपाक)

सरदारः मैकू, यह उसी गाजीपुर वाले मल्लाह की करतूत है। उसी के इशारे पर फिरंगियों की फौज बलिया से लौट पड़ी।

मैकूः हाथ तो कुछ नहीं लगा।

सरदारः अगर महाराज पहुँच जाएँ तभी तो भीमा आगे बढ़ निकला है। रस्सी इसी खूँटे से बाँध दे मैकू और तू किनारे पर जाकर मल्लाहों को रस्सी पर लगा दे।

(एकाध गोली की आवाज़ जब–तब सुनाई पड़ती है।)

मैकूः (खूँटे से रस्सी बाँधते हुए) गोलियों की बौछार कम हो गई, सरदार।

सरदारः नाव करीब आ गई है। फिरंगी की गोली कहाँ तक पहुँचेगी? मैकू, मैकू, जल्दी दौड़, भीमा इशारा कर रहा है। दौड़, ला यह रस्सी मुझे दे। उतर जा पानी में।

(मैकू का दौड़ते हुए जाना)

सरदारः मैकू, शाबाश! (रस्सी हाथ में ले लेता है।)

(घोड़े की टाप सुनाई पड़ती है।)

सरदारः कौन?

अश्वारोहीः महाराज कहाँ हैं?

सरदारः आप कौन हैं?

अश्वारोहीः जगदीशपुर से मैं आ रहा हूँ। पड़ाव पर मालूम हुआ महाराज घाट पर उतर रहे हैं। अभी उतरे नहीं?

सरदारः गंगा मैया की कृपा रही तो पल–भर में उतरे जाते हैं, देख रहे हैं वह नाव?

अश्वारोहीः क्यों?

सरदारः गोलियों की बौछार झेलते हुए आए हैं।

अश्वारोहीः गोलियाँ! तो हमारी फौज पड़ाव पर क्यों है?

सरदारः यह फौज के इस पार उतर जाने के बाद हुआ है।

अश्वारोहीः इधर ही आ रहे हैं– एक ओर हरकिशुन सिंह और दूसरी ओर––

सरदारः भीमा मल्लाह–मेरा मल्लाह। इधर आएँ सरकार, इधर।

(पानी की छप–छप। घायल कुँवर सिंह का प्रवेश। थोड़ा रुक–रुककर बोलते हैं, किन्तु स्वर में फिर भी दृढ़ता है।)

कुँवर सिंहः नाथू सरदार! तुम्हारा यह भीमा मल्लाह बहुत दिलेर है। इसी की बदौलत हम किनारे पर आ सके।

सरदारः महाराज, जो आपके कुछ काम आ सके, वह भाग्यवान है।

हरकिशुन सिंहः महाराज, आपको यहाँ कुछ देर रुकना जरूरी है।

कुँवर सिंहः खून देखकर डरते हो, हरकिशुन सिंह ?

हरकिशुन सिंहः दोनों चोटें गहरी हैं।

कुँवर सिंहः जाँघ का जख्म तो गहरा नहीं है। रक्त बंद हो गया। लेकिन बाँह को तुमने बेकार बाँधा।

हरकिशुन सिंहः दर्द ज्यादा है क्या?

कुँवर सिंहः यह हाथ बेकार हो गया हरकिशुन सिंह, हड्डी अलग हो गई है, माँस लटक रहा है। फिरंगी की गोली–।

हरकिशुन सिंहः यहाँ कोई जर्राह भी तो नहीं।

सरदारः सरकार! रात–भर यहाँ आराम करें। मैं वैद्य के लिए आदमी दौड़ाता हूँ।

कुँवर सिंहः नाथू सरदार, तुम लोग दिलेर हो, लेकिन अकल मोटी है। मैं और मेरी फौज के आदमी यहाँ रहेंगे, तो भोर होते ही गाजीपुर में फिरंगियों का स्टीमर आ पहुँचेगा।

सरदारः लेकिन आपको तकलीफ –

कुँवर सिंहः तकलीफ! नाथू सरदार, तुमने नशा किया है कभी?

सरदारः सरकार, अक्सर करते हैं।

कुँवर सिंहः मुझे भी यह एक साल से नशा है। फिरंगियों ने मुझे एक नया नशा दे दिया।

सरदारः महाराज की जीत की हर जगह जय–जयकार है।

कुँवर सिंहः जीत और हार क्या है? युद्ध भी एक हुनर है, कला है। आँख मूँदकर शत्रु से भिड़ जाना युद्ध कला नहीं। असली हुनर है शतरंजी चालों में मात–पर–मात देने में। इन फिरंगी जर्नैलों को छकाने में जो मजा आता है, उसके आगे सब नशे फीके हैं। तुम कहते हो, मैं घायल हूँ, मैं कहता हूँ, कलावंत अपना हुनर दिखाने में चोट खा जाए, तो उसकी वह चोट सिंगार हो जाती है।

भीमा–राजा कुँवर सिंह की दिलेरी जवानों को नीचा दिखाती है।

कुँवर सिंहः तुम कहते हो, मैं बहादुर हूँ। मैं मौत से डरता नहीं, मगर मौत को न्यौता भी नहीं देता। आगे बढ़ना भी जानता हूँ और मौके पर कदम पीछे भी हटा सकता हूँ। मेरी दिलेरी के पीछे दिमाग है, कोरा दिल ही नहीं है, हरकिशुन सिंह।

हरकिशुन सिंहः जी, आप थोड़ा लेट जाएँ। मैं डोली का बंदोबस्त करता हूँ।

कुँवर सिंहः डोली! मुझे मेरे बुढ़ापे की याद न दिलाओ, हरकिशुन सिंह। कितनी देर का रास्ता होगा?

हरकिशुन सिंहः जगदीशपुर का। यही कोई–

अश्वारोहीः (जो अब तक चुप खड़ा हुआ था) महाराज, घोड़े से रातभर का रास्ता है, डोली में देर लगेगी।

कुँवर सिंहः तुम कौन हो?

अश्वारोहीः मैं अभी जगदीशपुर से आया हूँ, महाराज ही के पास।

कुँवर सिंहः (बैठकर) तुम जगदीशपुर से आए हो मेरे पास, और अब तक चुपचाप खड़े ही रहे। तुम्हारा नाम?

अश्वारोही: विश्वनाथ सिंह। यह खरीता भी लाया हूँ।

कुँवर सिंह: किसने भेजा है?

विश्वनाथ: कुँवर अमरसिंह ने।

कुँवर सिंह: पढ़ो, हरकिशुन सिंह। अमर सिंह क्या लिखता है? विश्वनाथ तुम कुँवर सिंह को नहीं जानते हो? नालायकी के लिए गोली से उड़ा देता हूँ।

विश्वनाथ: खता हुई महाराज, मैं समझा, महाराज घायल हैं।

कुँवर सिंह: फिर वही बात। जिस भाई से दस महीने से बिछुड़ा हुआ हूँ, उसकी चिट्ठी पढ़ने के लिए अच्छा होने का इंतजार करूँ। जगदीशपुर वापस पहुँचने के लिए मैंने आजमगढ़ छोड़ा, गाजीपुर पर हमला नहीं किया और गंगा पार करने के लिए यह सब जाल रचा———

हरकिशुन सिंह: वह तो अब तक जगदीशपुर पहुँच गए होंगे।

कुँवर सिंह: कौन अमर सिंह? क्या यही लिखा है? पूरी बात कहो, हरकिशुन सिंह।

हरकिशुन सिंह: फिरंगी जगदीशपुर में नहीं हैं। कुमार अमर सिंह आज शाम ही दल—बल सहित वहाँ पहुँच रहे हैं। दक्खिन का सारा इलाका हाथ में आ गया है। आपके पहुँचने भर की देर है। भोजपुर की सारी रैयत जगदीशपुर के झंडे के नीचे फिर जमा हो रही है। आजमगढ़ की लड़ाई की चर्चा से महाराज का असर दिन—दूना, रात—चौगुना बढ़ रहा है।

कुँवर सिंह: और, फिरंगी?

हरकिशुन सिंह: आरा में ही हैं। जंगल की वजह से हिम्मत नहीं पड़ती, मगर हमले की तैयारी जोरों से कर रहे हैं। जासूसों ने खबर दी है।

कुँवर सिंह: क्या?

हरकिशुन सिंह: कर्नल लेगार्ड नामक अफसर एक—दो दिन में ही हमला करनेवाला है। जंगल के किनारे पर रसद का सामान पहुँचाया जा रहा है।

कुँवर सिंह: तो हम अभी रवाना होंगे। अभी कूच का डंका बजाओ। सबेरे तक पहुँचना है। तुम लोग जाओ, तैयारी करो। लेकिन ज़रा ठहरो, हरकिशुन!

हरकिशुन सिंह: जी।

कुँवर सिंह: कुहनी की चोट ने इस हाथ को बेकार ही नहीं किया है, सारे बदन में ज़हर फैलाना शुरू कर दिया है।

हरकिशुन सिंह: फौज को आगे बढ़ने दें। महाराज पीछे चलें।

कुँवर सिंह: तुम नहीं समझते हो, हरकिशुन सिंह। मेरे जगदीशपुर फौरन पहुँचने में ही हित है। जगदीशपुर के उजड़े महल मुझे बुला रहे हैं। मैं बेताब हूँ फिरंगी से बदला लेने के लिए। उसने मेरा मंदिर ढहाया। उसने मेरे भोजपुर की गरीब रैयत को सताया, जिसके अरमानों का मैं आईना हूँ। मैं नहीं रुक सकता।

हरकिशुन सिंह: लेकिन बदन में फैलता हुआ यह जहर? महाराज तो घोड़े पर देर तक चढ़ भी नहीं सकेंगे।

कुँवर सिंहः उसका इलाज है। जिस भुजा को फिरंगी की गोली जहरीला बना रही है, यह गलती हुई, सड़ती हुई भुजा है, इसे अलग करना होगा।

भीमाः महाराज!

हरकिशुन सिंहः यह आप क्या कह रहे हैं! महाराज!

कुँवर सिंहः तुम किसी हकीम से पूछ लो। गलते हुए अंग को अलग करना ही बुद्धिमानी है। और, फिर यह भुजा, जिसे फिरंगी गोली अपवित्र बना चुकी है– है तुममें कोई माई का लाल, जो एक ही वार में इस भुजा को अलग कर दे। तुम, नाथू सरदार? नहीं। तुम विश्वनाथ? तुम भी नहीं। भीमा? कोई नही। हरकिशुन सिंह, उठाओ खड्ग, मेरे मुँह से आह भी न निकलेगी।

हरकिशुन सिंहः मालिक पर हाथ उठाऊँ? महाराज, यह मुझसे न होगा।

कुँवर सिंहः अच्छा, तो यह काम मुझे ही करना पड़ेगा। (तलवार निकालते हुए) तुम न सही, मेरी प्यारी तलवार तो मेरा कहना मानेगी ही। इसकी तेज धार का पानी फिरंगी के लगाए धब्बे को झट से धो देगा।

विश्वनाथः तो क्या महाराज अपने हाथों–

कुँवर सिंहः–यहाँ नहीं, आओ मेरे साथ गंगा मैया के किनारे। उन्हीं की मझधार में यह गोली लगी थी, उन्हीं की धार में यह भुजा भी अर्पित करूँगा। आओ, घोड़ा भी यहीं ले आओ।

(कुँवर सिंह और उसके साथी जाते हैं। पदध्वनि। भीमा सरदार को रोक लेता है।)

भीमाः सरदार!

सरदारः भीमा, महाराज को रोकने की शक्ति मुझमें तो क्या, देवताओं में भी नहीं है।

(नेपथ्य से कुँवर सिंह की आवाज)

कुँवर सिंहः गंगा मैया, तुम्हारे इस बेटे ने बहुतेरी खून की नदियाँ बहाई हैं। आज एक अनोखी भेंट लो माँ, फिरंगी की गोली से अपवित्र किए इस शरीर को पवित्र करो। माँ, मुझे शक्ति दो। तुम्हारा यह जल हाथ में लेकर शपथ खाता हूँ, जब तक तन में जान है, यह देशसेवा में लगा रहेगा। तो यह भेंट लो, माँ, जय गंगा मैया की।

(तलवार से घायल हाथ को काट देते हैं।)

भीमाः राजा कुँवर सिंह की जय!

सरदारः रणबाँकुरे कुँवर सिंह की जय!

हरकिशुन सिंहः महाराज!

(घोड़ों के टापों का स्वर)

भीमाः (सभीत स्वर में) सरदार, सरदार, वह देखो।

सरदारः कैसी ऊँची लहर है!

भीमाः माँ गंगे उमड़ रही हैं।

सरदारः उमड़ो माँ, उमड़ो। ऐसी भेंट और कब मिलेगी तुम्हें माँ।

कुँवर सिंहः तुमने मेरी भेंट स्वीकार की माँ, माँ, माँ।

दूसरा दृश्य

(पाँच दिन बाद, जगदीशपुर में राजा कुँवर सिंह का महल। दूर से शहनाई की आवाज सुनाई दे रही है जो कभी–कभी बंद हो जाती है। कुछ लोग खड़े हैं। अमर सिंह का प्रवेश)

अमरसिंहः यहाँ शहनाई! ओह!

चोबदारः बंद करो यह शहनाई, महाराज को आराम की जरूरत है।

हरकिशुन सिंहः स्वयं महाराज की आज्ञा है कि शहनाई बजेगी।

अमर सिंहः कौन, हरकिशुन। तुम भी महाराज के हठ को नहीं रोकते।

हरकिशुन सिंहः आप जो उनके भाई हैं कुमार अमर सिंह, आपकी बात वे नहीं मानते, तो मैं भला–

अमर सिंहः उनका कहना है अमर सिंह न भी होता, तो भी मेरे भाइयों की कमी नहीं।

हरकिशुन सिंहः लेकिन आपकी दिलेरी का वे लोहा मानते हैं। गंगा के तट पर आपके जगदीशपुर पहुँचने की बात सुनी, तो यहाँ आने के लिए बेताब हो उठे।

अमर सिंहः हरकिशुन सिंह, मैं दंग हूँ। दादा ने यह लोहे का बदन, यह न थकने वाला दिमाग कहाँ से पाया। रात–ही–रात घोड़े पर चलकर यहाँ पहुँचे। कटी भुजा, घायल बदन, न नींद, न आराम– और यहाँ आते ही दूसरे दिन फिरंगियों से वह घमासान लड़ाई।

हरकिशुन सिंहः महाराज की यह सबसे बड़ी विजय थी। सैकड़ों गोरे सिपाही मारे गए। सारी रसद हमारे हाथ आई।

अमर सिंहः अब फिरंगी इस इलाके में मुँह न दिखा सकेंगे।

हरकिशुन सिंहः कर्नैल लेगार्ड के मारे जाने से फिरंगियों की इज्जत में भारी बट्टा लगा है।

अमर सिंहः दादा की यह सूझ अनोखी थी। पहले दुश्मन को जंगल में दूर तक घुस आने दो और फिर हठात् तीनों तरफ से छापा मारो। यह जंगल जगदीशपुर का कवच है।

(चोबदार का प्रवेश)

चोबदारः मालिक, पुरोहित जी पधारे हैं।

अमर सिंहः पुरोहित जी! आने दो। (चोबदार जाता है।) (पुरोहित जी का प्रवेश)

पुरोहित जीः कैसे हैं महाराज? मेरे पास आज्ञा पहुँची, तुरंत बुलाया है।

अमर सिंहः जगदीशपुर के महल पर कंपनी के झंडे के स्थान पर यह भारतीय झंडा देखकर संतोष हुआ, पुरोहित जी?

पुरोहित जीः एक दिन फिरंगियों के अत्याचारों को देखकर महा असंतोष हुआ था, महल के वृक्षों पर लाशें टाँगी गई थीं, मंदिर को बारूद से उड़ा दिया गया था। और आज? आप दोनों भाइयों के शौर्य और प्रताप से फिरंगी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हैं।

अमर सिंहः लेकिन पुरोहित जी, मैं समझता हूँ, दादा, काल और उम्र के बंधनों से परे हैं।

पुरोहित जीः आपने ठीक सोचा था कुमार साहब, उनके यश के उत्तुंग शिखर तक काल की पददलित धूल नहीं पहुँच सकती।

हरकिशुन सिंहः इधर ही आ रहे हैं।

(कुँवर सिंह का प्रवेश। स्वर में शिथिलता)

पुरोहित जीः महाराजाधिराज कुँवर सिंह की जय हो। महाराज, इस अवस्था में आपको बाहर आना उचित नहीं।

कुँवर सिंहः कौन ? पुरोहित जी। आप आ गए ?

अमर सिंहः तोषक मँगाऊँ ?

कुँवर सिंहः मँगाओ। और पिता जी का दिया पुराना खड्ग भी। पुरोहित जी, देखा यह लिबास?

पुरोहित जीः महाराज का प्रताप द्विगुणित होकर चमक रहा है इस राजसी वेशभूषा में।

कुँवर सिंहः जानते हो हरकिशुन सिंह, आज मैंने यह ठाठ क्यों रचा है ? नहीं जानते ?

(तोषक लाया जाता है और चौकी पर रख दिया जाता है। कुँवर सिंह बैठते हैं।)

हरकिशुन सिंहः महाराज, थोड़ा लेट जाएँ।

कुँवर सिंहः यह लिबास लेटने के लिए नहीं है, हरकिशुन सिंह। अमर सिंह! अमर सिंह!

अमर सिंहः हाँ भैया।

कुँवर सिंहः मैंने कुछ और लोगों को भी बुलाया था।

पुरोहित जीः बाहर सब महाराज के दर्शन की प्रतीक्षा में हैं।

हरकिशुन सिंहः भोजपुर के सब परगनों के जेठ रैयत आए हैं।

कुँवर सिंहः बुलाओ उनको।

अमर सिंहः यहाँ ?

कुँवर सिंहः हाँ, यह महल जितना मेरा और तुम्हारा है, उतना ही उनका भी।

(चोबदार जाने को उद्यत)

कुँवर सिंहः और, चोबदार, उन्हें भी बुलाओ। क्या नाम था उस मल्लाह का, हरकिशुन?

हरकिशुन सिंहः नाथू सरदार।

कुँवर सिंहः हाँ, और वह जिसने नाव खींची थी।

हरकिशुन सिंहः भीमा मल्लाह।

कुँवर सिंहः दोनों को बुलाओ।

(चोबदार का प्रस्थान)

पुरोहित जीः महाराज, आपकी भुजा बहुत अधिक सूज रही है। आप विश्राम करें।

कुँवर सिंहः पुरोहित जी, आठ महीने पहले आपने मदिरा का एक घूँट पिलाया था।

पुरोहित जीः राजपूती आन का घूँट। विदेशियों से प्रतिशोध लेने की मदिरा का घूँट।

कुँवर सिंहः पुरोहित जी, नशा उतर रहा है। बुढ़ापे के बंधन जो टूक–टूक हो गए थे, फिर से जुड़ गए हैं।

अमर सिंहः (रुँधे गले से) दादा, दादा!

कुँवर सिंहः छी अमर सिंह! तुम्हारी आँखों में आँसू? आज तो मेरी विजय की बेला है, आज तो फिरंगी के अरमानों की कब्र पर मेरा सिंहासन जम रहा है। और तुम्हारी आँखों में आँसू? इधर देखो, रैयत, मल्लाह और ग्वाले!

(चोबदार के साथ जेठ रैयतों, मल्लाहों और ग्वालों का प्रवेश)

अमर सिंहः दादा कौन–सी शक्ति है, जिसने आपके प्राणों में अटूट साहस का तूफान फूँक दिया था? मुझे भी उसका वरदान दीजिए।

कुँवर सिंहः वह देखो अमर सिंह, जेठ रैयत, मल्लाह, किसान। यही है वह शक्ति जिसके बल पर कुँवर सिंह भोजपुर का राजा है। यही है वह तुरही, जिसकी आवाज़ मेरे गले से निकलती थी और फिरंगी भाग निकलते थे। अमर सिंह, नेह के बिना ज्योति कैसी, प्रजा के बिना राजा कैसा। इनका साथ न छोड़ना, भैया।

अमरसिंहः दादा, मैं समझ रहा हूँ।

कुँवर सिंहः शहनाई क्यों बंद कर दी? पुरोहित जी, तिलक लगाइए–लगाइए। आप लोग चुप हैं। कुँवर सिंह का राजतिलक और यह चुप्पी? हरकिशुन सिंह––हाँ––भीमा मल्लाह।

भीमाः महाराज,

कुँवर सिंहः तुम्हारे राजा का तिलक है और तुम गीत न सुनाओगे! आज मल्लाहों का वह गीत गाओ जिसके बल पर कुँवर सिंह राजा बना, वह जो धरती की आवाज़ है।

(भीमा और उसके साथी बहुत हल्के स्वर में गाते हैं।)

राजा कुँवर सिंह का राज,
कि जिसमें दीन बने सरताज
कि जिनके छूने में भी लाज।

कुँवर सिंहः और, और जोर से!

(स्वर तीव्र होता है।)

ताज पर इठलाता है आज,
राजा कुँवर सिंह का राज।

कुँवर सिंहः अमर सिंह

अमर सिंहः दादा।

कुँवर सिंहः सुनी वह आवाज़, गंगा मैया की आवाज़?

अमरः सुन रहा हूँ।

कुँवर सिंहः अमर सिंह, फिरंगी को छोड़ना मत।

अमर सिंहः नहीं छोडूँगा। मैं आरा पर हमला करूँगा, दादा।

कुँवर सिंहः कल ही।

अमर सिंहः कल ही दादा।

(स्वर तीव्र हो रहा है।)

कुँवर सिंहः गंगा मैया, तुम भुजा से संतुष्ट नहीं, तो लो।

पुरोहित जीः दीपक बुझ रहा है।

(स्वर मंद हो जाता है।)

अमर सिंहः दादा! दादा!

(पटाक्षेप और गाने की गूँज जारी।)

शब्दार्थ :– **बंदोबस्त**–प्रबंध, इंतजाम, **रैयत**–प्रजा, रियाया, जनता शासित, **सरताज**–नायक, सरदार, शिरोमणि, **इठलाना**–इतराना, मटकना, गर्वसूचक चेष्टा या भाव, **करतूत**–काम, कला, **दिलेर**–बहादुर, साहसी, शूरवीर, **जर्राह**–चीर फाड़ का काम करनेवाला, फोड़ो आदि को चीरकर चिकित्सा करनेवाला, **फिरंगी**–गोरे, अंग्रेज, **हुनर**–कारीगरी, कला, फन, **बेताब**–जो बैचेन हो, विकल, व्याकुल, **मझदार**–नदी के मध्य की धारा, बीच धारा, किसी काम का मध्य, **खरीता**–वह बड़ा लिफाफा जिसमें किसी बड़े अधिकारी आदि की ओर से मातहत के नाम आज्ञापत्र हो, **लिबास**–पहनावा, पोशाक, **चोबदार**–ऐसे सेवक प्रायः राजों, महाराजों और बहुत से रईसों की ड्यौढ़ियों पर समाचार आदि ले जाने और ले आने तथा इसी प्रकार के दूसरे कामों के लिये रहते हैं,सवारी या बारात आदि में ये आगे–आगे चलते हैं, **प्रतिशोध**–बदला।

अभ्यास

पाठ से

1. इस एकांकी की घटना किस समय की है?
2. कुँवर सिंह, विश्वनाथ पर क्यों नाराज हुए ?
3. भीमा अपने सरदार से बाबू वीर कुँवर सिंह के बारे में क्या कहता है ?
5. कुँवर सिंह ने अपनी बाँह काटकर गंगा जी को क्यों अर्पित कर दी ?
6. बच्चे–बच्चे के जबान पर चढ़े कुँवर सिंह के गीत का भाव क्या है ?
7. आप यह कैसे सिद्ध करेंगे कि सन् 1857 के स्वतंत्रता–संग्राम में सभी वर्ग के लोगों ने भाग लिया था?

8. कुँवर सिंह ने वह कौन–सी शक्ति बताई जिसके बल पर वे भोजपुर के राजा बने थे?
9. किसकी बदौलत कुँवर सिंह किनारे पर आ सके और कैसे ?
10. कुँवर सिंह के अनुसार युद्ध की क्या हुनर (कला) है ?
11. अंग्रेजों ने मेरे भोजपुर के गरीब रैयतों को सताया, जिनके अरमानों का मैं आईना हूँ'' संवाद के द्वारा एकांकीकार कुँवर सिंह के किन भावों को व्यक्त करना चाहता है ?
12. अनोखी भेंट क्या है और कुँवर सिंह भेंट किसे देते हैं ?
13. कुँवर सिंह, अमर सिंह का राजतिलक करते हुए क्या सीख देते हैं और क्यों ?
14. नावों को गंगा जी में डुबा देने के लिए महाराज कुँवर सिंह ने क्यों आदेश दिया था?
15. महाराज कुँवर सिंह को अँग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करने में इतनी सफलता किनके कारण मिली ?
16. महाराज कुँवर सिंह बहुत अधिक बीमार होने पर भी जगदीशपुर जाने के लिए क्यों बेताब थे ?
17. कुँवर सिंह ने भीमा से कहा था, ''मुझे भी एक साल से नशा है।'' उन्हें कैसा नशा था?
18. इन पंक्तियों का अर्थ प्रसंग देकर लिखिए–
    क. मैं मौत से डरता नहीं पर मौत को न्यौता भी नहीं देता।
    ख. कलावंत अपना हुनर दिखाने में चोट खा गया तो उसकी वह चोट सिंगार हो जाती है।
    ग. नेह के बिना ज्योति कैसी, प्रजा के बिना राजा कैसा ?

पाठ से आगे

9LFJHH

1. आपने, 1857 की क्रांति अथवा सिपाही विद्रोह के बारे में इतिहास की पुस्तकों में पढ़ा होगा। इस क्रांति में भाग लेनेवाले प्रमुख सेनानियों की एक सूची बनाइए।
2. इस एकांकी को पढ़ते समय कौन सा पात्र आपको अधिक प्रभावित करता है और क्यों?
3. आपके आस–पास वैसे लोग रहते होंगे जिन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलनों में भाग लिया होगा उनके बारे में जानकारी प्राप्त कर एक लेख तैयार कीजिए।
4. मैं मौत से नहीं डरता, मगर मौत को न्योता भी नहीं देता। आगे कदम बढ़ाना भी जानता हूँ और मौके पर कदम पीछे भी हटा सकता हूँ। मेरी दिलेरी के पीछे दिमाग है, कोरा दिल ही नहीं है। इस कथन से कुँवरसिंह के व्यक्तित्व के किस पहलू का पता चलता है? साथियों से बातचीत कर अपनी समझ को लिखिए।
5. एकांकी में मल्लाह, ग्वाले जैसे किसी जाति सूचक शब्दों का प्रयोग हुआ है। क्या ऐसा प्रयोग होना चाहिए और क्यों? कक्षा में चर्चा कर अपने विचारों को लिखने का प्रयास कीजिए।

भाषा से

1. पाठ में बहुत सारे मुहावरों का प्रयोग हुआ है जैसे लोहा मानना– श्रेष्ठता स्वीकार

करना, आँखों में धूल झोंकना–देखते–देखते धोखा देना, अकल मोटी होना–कम बुद्धि, बदन में तूफान फूँकना– बेहद ऊर्जावान होना, अमृत की घूँट पीना–अमर होना, मौत को न्योता देना–जान बूझ कर मृत्यु को आमंत्रण देना, इन मुहावरों का स्वतंत्र रूप से वाक्य में प्रयोग कीजिए और पाठ से अन्य मुहावरों को खोज कर लिखिए।

9LPFYJ

2. पाठ में ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग हुआ है, जैसे पानी के लिए छप–छप वैसे ही निम्नलिखित सन्दर्भों के लिए ध्वन्यात्मक शब्द लिखिए –
   - तेज हवा का प्रवाह ——————————
   - नदी की धारा ——————————
   - पैरों की ध्वनि ——————————
   - खाली हवेली या घर ——————————
   - आग की लपटें ——————————
   - अँधेरा सूना रास्ता ——————————
3. पाठ में प्रयुक्त जातिवाचक और भाववाचक संज्ञा का चुनाव कीजिए–
   ज़हरीला, दिलेरी, हाहाकार, कलाकारी, हरकारा, सरदार, सरदारी, दिलेर, कलावंत, जर्राह, शतरंजी, जासूसी, बेताबी, ज़हर, नालायकी।
4. पाठ में प्रयुक्त 'भला' शब्द के कितने अर्थ निकलते हैं। आप ऐसे दो वाक्य बनाइए जिनसे उनके अर्थ का अंतर स्पष्ट हो जाए।
5. इस एकांकी की कथा को संक्षेप में लिखिए।

योग्यता विस्तार

9LYC17

1. 1857 की क्रांति से जुड़े भारत के महत्वपूर्ण स्थलों को साथियों के सहयोग से नक्शे में पहचान कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
2. नाना साहब, तात्या टोपे, बहादुर शाह जफर, वीर नारायण सिंह, लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल की तस्वीरों के साथ उनका संक्षिप्त जीवन परिचय लिख कर कक्षा में साझा कीजिए।
3. अमर सिंह और कुँवर सिंह दो भाई हैं। भाइयों के संबंध पर आधारित कुछ कहानियों को खोजिए और उस पर कक्षा में चर्चा कीजिए। जैसे प्रेमचन्द लिखित बड़े भाई साहब।
4. छत्तीसगढ़ में 1857 के संग्राम के नायक वीर नारायण सिंह थे। इनके संबंध में जानकारी लेकर कक्षा में सुनाइए।